



संताल परगना चेम्बर ऑफ कॉमर्स एण्ड इण्डस्ट्रीज, देवघर SANTAL PARGANA CHAMBER OF COMMERCE & INDUSTRIES, DEOGHAR

✉ spccideoghar.2021@gmail.com | www.spccideoghar.in

PRESIDENT

ALOK KR. MALLICK

9934503132 | 8409386865

GENERAL SECRETARY

PRAMOD CHHAWCHHARIA

8709873483 | 9431132221

पत्रांक : SPCCI- 25/2021-23

दिनांक : 13.04.2022

सेवा में,

डॉ. निशिकान्त दुबे,
माननीय सांसद, गोड्डा।

विषय : झारखण्ड राज्य कृषि उपज और पशुधन विपणन विधेयक 2022 के संबंध में ज्ञापन।
महोदय,

राज्य सरकार द्वारा 25 मार्च 2022 को विधानसभा में पारित झारखण्ड राज्य कृषि उपज और पशुधन विपणन विधेयक 2022 से राज्य के व्यापारियों में असहजता की स्थिति है और राज्य के व्यापारियों के साथ व्यापक सहमति बनाये बिना ही राज्य में फिर से अप्रत्यक्ष रूप से 2 एवं 1 प्रतिशत बाजार समिति शुल्क लगाये जाने का प्रावधान किया जा रहा है।

इस परिपेक्ष्य में आपका ध्यान निम्न बिन्दुओं पर आकर्षित करते हुए उक्त विधेयक पर सरकार द्वारा पुनर्विचार करने के लिए आपके स्तर से भी पहल करने की कृपा की जाय।

1. राज्य में 2 प्रतिशत बाजार समिति शुल्क पहले भी लागू थी। लेकिन राज्यभर के व्यापारिक संगठनों के भारी विरोध और लंबे जद्दोजहद के बाद 2015 में पिछली सरकार द्वारा इसे समाप्त कर दिया गया था। इस शुल्क के समाप्त होने से किसानों तथा व्यापारियों को राहत मिली थी।
2. इस शुल्क से सरकार को जितना राजस्व संग्रह नहीं होता था, उससे कहीं ज्यादा मंडियों तथा हाट-बाजारों में इसके नाम पर अवैध वसूली, भयादोहन और भ्रष्टाचार के आरोप लगते थे। एक बार फिर से वर्तमान सरकार कृषि बाजार समिति टैक्स का अप्रत्यक्ष बोझ झारखण्ड के व्यापारियों पर थोपना चाहती है जो अव्यावहारिक तथा यहां के व्यापारियों एवं लोक हित के प्रतिकूल साबित होगा।
3. वर्तमान में हमारे पड़ोसी राज्य बिहार, बंगाल, उड़ीसा सहित अन्य राज्यों में भी बाजार समिति शुल्क नहीं है। यह एक अप्रत्यक्ष कर है और कृषि मूल्य के लागत में जुड़ जाता है। अतः अपने राज्य में इस शुल्क को पुनः लगाये जाने पर यहां कृषि उत्पादों के लागत मूल्य बढ़ेंगे जिससे यहां के किसानों और व्यापारियों को अपने उत्पादों की खरीद-बिक्री में नुकसान उठाना पड़ेगा तथा इनके व्यापार पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेंगे, जबकि इसका फायदा पड़ोसी राज्य के कृषि व्यापारियों को मिलेगा।
4. झारखण्ड मुख्य रूप से एक उपभोक्ता राज्य है जहां अधिकतर कृषि उत्पादित वस्तुएं देश के अन्य राज्यों से आती हैं। अतः बाहर से मंगायें जाने वाले उत्पादों पर यहां कृषि शुल्क लगाये जाने का कोई औचित्य नहीं है। शुल्क लग चुके वस्तुओं पर झारखण्ड में भी अलग से टैक्स या शुल्क लगाये जाने की स्थिति में एक ही वस्तु पर दुबारा शुल्क लगाने के कारण महंगाई बढ़ेगी तथा उपभोक्ताओं पर अतिरिक्त भार पड़ेगा।
5. इस शुल्क के पुनः लागू होने पर झारखण्ड के मुख्य उत्पादन धान की मूल्यवृद्धि होगी जिससे हमारे यहां चावल के दाम पड़ोसी राज्यों बिहार, बंगाल, उड़ीसा और छत्तीसगढ़ के मुकाबले ज्यादा हो जायेगी। इन प्रतिकूल परिस्थितियों में यहां के चावल का व्यापार अन्य राज्यों में स्थानांतरित होने लगेंगे।
6. झारखण्ड में बाजार समिति शुल्क समाप्त होने के बाद काफी संख्या में कृषि उपज प्रसंकरण उद्योग लगे तथा कृषि उपजों की बिक्री बढ़ी और यहां के किसान तथा थोक एवं खुदरा विक्रेता लाभन्वित हो रहे थे। एक बार फिर से यह विवादित टैक्स लागू होने पर यहां का व्यापार बुरी तरह से प्रभावित होगा।
आपका ही,

आलोक कुमार मल्लिक
अध्यक्ष

रमेश बाजला
अध्यक्ष, राइस मिल एसोसिएशन, देवघर

VICE PRESIDENT

UMESH RAJPAL

9431781598 | 7250784754

VICE PRESIDENT

SANJAY MALVIYA

9431134670 | 9576616022

VICE PRESIDENT

PIYUSH JAISWAL

9431163649 | 7717726102

JOINT SECRETARY

ANAND SAH

8521594569

TREASURER

DEEPAK SARAIYAN

9386651205